इस युग में, आदि जगद्गुरु शंकरचार्य ने निराकार भगवान के दर्शन के प्रचार के माध्यम से हिंदू धर्म को फिर से स्थापित किया। उनका दर्शन था, 'भगवान और आत्मा में कोई अंतर नहीं है। एक बार माया का भ्रम खत्म हो जाने के बाद, जीव को अनंत खुशी का मूल रूप मिल जाता है। जो कुछ अस्तित्व में है वो सब कुछ भगवान है तथा और किसी चीज के अस्तित्व की कोई गुंजाइश नहीं है। '

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

हिंदू दर्शन आत्मा को भगवान का एक पहलू या भगवान का एक शक्ति के रूप में देखता है। शंकरचार्य ने भगवान की शक्तियों में विश्वास नहीं किया क्योंकि उनके अनुसार, पूरे ब्रह्मांड में, भगवान के अलावा कुछ भी नहीं है।

एक बार शंकरचार्य जब कश्मीर में थे, तो वहा अतिसार से पीड़ित हो गये थे तब एक लड़की ने उनसे संपर्क किया और कहा, 'क्या आप शास्त्रों पर चर्चा करने के लिए मेरी चुनौती स्वीकार करेंगे?'

शंकरचार्य ने उसे देखा और सोचा 'यह छोटी लड़की मुझे चुनौती दे रही है!' लेकिन कहा, 'मुझे बीमारी के कारण बहुत कमजोरी लग रही है। मेरे पास किसी भी चर्चा के लिए शक्ति नहीं है। हम दो-तीन दिनों के बाद बहस करेंगे। '
लड़की ने कहा, 'शक्ति? लेकिन आप किसी शक्ति में विश्वास नहीं करते! '

शंकरचार्य चकित हो गए। उन्हे लड़की ने अपने देवी शक्ति के मूल रूप का दर्शन दिया। शंकरचार्य को शक्ति

का रूप देखकर शक्ति के अस्तित्व का स्वीकार करना पड़ा। असल में उस समय भारत में व्यापक रूप से बुद्धवाद का प्रचार था। उससे छुटकारा पाने के लिए शंकरचार्य ने निराकार भगवान का सिद्धांत प्रतिपादित किया । भगवान बुद्ध ने निर्वाण में विश्वास किया था। निर्वाण के समान हिंदू में वर्णित मुक्ति की अवधारणा है। इसलिए शंकरचार्य ने निराकार भगवान के सिद्धांत की उपयोग किया और बुद्धवादी दर्शन को तर्क से परास्त किया।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

लेकिन कई जगहों पर उन्होंने कृष्ण को भक्ति का प्रचार किया। उन्होंने अपनी मां को कृष्ण को भक्ति का अभ्यास करने की सलाह दी। उन्होंने कहा, 'जब तक कि कृष्ण के कमल चरणों की भक्ति नहीं की जाती है, तब तक मन शुद्ध नही हो सकता।' ' श्रीकृष्ण भक्ति करने वाले के कभी पछताना नही पडता। वास्तव में उन्होंने कहा, 'जो लोग योग, निराकार भगवान या भक्ति के अलावा कुछ भी आध्यात्मिक अभ्यास करना चाहते हैं, वे जो चाहते है वो करें। मुझे उनमें से किसी में कोई दिलचस्पी नहीं है। मै तो श्रीकृष्ण के चरणारविंद के रस का पान करूंगा।'

भगवान शंकर का कहना है कि 'नरक, स्वर्ग और मुक्ति (निराकार ईश्वर के माध्यम से दिव्य खुशी) सब एकसमान हैं।' जिसका अर्थ है कि किसी को भी निराकार भगवान के पीछे नहीं जाना चाहिए। इस प्रकार दिव्य प्रेम सबसे अंतिम रस है। और हम सब जानते हैं कि कैसे प्यार करना है। बस प्यार के प्रेमास्पद में परिवर्तन की आवश्यकता है। प्यार संसारी व्यक्ति की जगह श्रीकृष्ण से करना है।